The Research Dialogue

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-1, Issue-4, January 2023
www.theresearchdialogue.com

ग्रामीण महिलाओं के विकास में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

अरविन्द कुमार,
शोधार्थी
समाजशास्त्र विभाग
जवाहरलाल नेहरू मेमोरियल पी.जी. कॉलेज-
बाराबंकी, उ0प्र0
(संबद्ध- डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय
अयोध्या, उ0प्र0)

डॉ0 सीताराम सिंह
प्रोफ़ेसर, समाजशास्त्र विभाग
जवाहरलाल नेहरू मेमोरियल पी.जी. कॉलेज-
बाराबंकी, उ0प्र0
(संबद्ध- डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय
अयोध्या, उ0प्र0)

सारांश:

भारत गांवों का देश है यही गांव के लोग यदि जागरूक नहीं होंगे तो देश कभी तरक्की की तरफ अग्रसर नहीं हो सकता है वर्तमान समय में इस बात को छुठलाया नहीं जा सकता है कि गांव अब शहरों से पीछे नहीं है इसका सबसे बड़ा कारण सूचना प्रौद्योगिकी है। भारत को आत्मनिर्भर बनाने में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। महिला शक्ति के कारण इस्तेमाल से देश की आर्थिक समृद्धि को तेजी से बढ़ाया जा सकता है महिलाओं को सशक्त बनाने का अर्थ है समूचे समाज को सामर्थ्य बनाना है, भारत में महिला सशक्तिकरण के चार प्रमुख आधार है शिक्षा, स्वास्थ्य,रोजगार और सामाजिक परिस्थितियां पहली तीन बातों के लिए सरकारी कार्यक्रम मददगार हो सकते हैं पर चौथा आधार सामाजिक सांस्कृतिक परिस्थितियों पर निर्भर करता है अलबत्ता शिक्षा और आध्यात्मिक संस्कृति में आ रहे परिवर्तन खासतौर से बदलती तकनीक और सूचना प्रौद्योगिकी भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। विश्व की कुल जनसंख्या में आधी जनसंख्या महिलाओं की है वह कार्यकारी घंटों में दो तिहाई का योगदान करती महिलाएं अधिकांश का पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन करती हैं वह बच्चों और बड़ों की देखभाल करती और परिवारिक व्यवसाय में सहयोग करती है ग्रामीण महिलाएं घर का कार्य शुल्क अप्रत्यक्ष रूप से करती हैं जी.डी.पी में इसकी गणना नहीं होती है।

भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति संबंधी 'राष्ट्रीय समिति रिपोर्ट' में कहा गया महिलाओं के स्वास्थ्य पर विशेष रूप से प्रभाव डालने वाले सांस्कृतिक मानदंड विवाह के प्रति दृष्टिकोण विवाह की आयु परिवार में महिला का स्थान सामाजिक मान्यताओं के अनुसार महिला की आपेक्षित भूमिका महिलाओं को स्वास्थ्य, शिक्षा, व्यवसाय,रोजगार के प्रति जागरूकता लाने में भी सूचना प्रौद्योगिकी का माध्यम काफी कारगर साबित हुए जैसे- ग्रामीण महिला टेक्नोलॉजी पार्क (आर.डब्ल्यू.डी.पी) "बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ" अभियान को मूर्त रूप देने और ग्रामीण महिलाओं को स्वावलंबी बनाने की दिशा में ग्रामीण महिला टेक्नोलॉजी पार्क की पहल भारत सरकार की विज्ञान प्रौद्योगिकी विभाग की है,इस प्रकार कार्यक्रम का उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं को आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी और सामान्य विज्ञान से परिचित कराना है इनमें किसी भी उम्र की महिलाएं शामिल हो सकेंगीं। शिक्षित होना भी जरूरी नहीं इसमें सामान्य कंप्यूटर शिक्षा परंपरा का हुनर तराशने के साथ हेल्प किया डिजिटल मार्केटिंग, फूड प्रोसेसिंग की जानकारी भी मिलेगी सीएसआईआर उत्तर-पूर्व विज्ञान तथा सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान जोरहाट के तहत ग्रामीण महिला प्रतियोगी की पार्क में विभिन्न उत्पादों जैसे- हैंड सेनीटाइजर, मास्क एवं तरल कीटनाशक के निर्माण के लिए महिलाओं को प्रशिक्षित किया जिससे यह बात साबित हुई कि ग्रामीण महिलाओं को भी सहायता मिले तो वे भी अच्छा परिणाम दे सकती है।

प्रस्तावना :–

आज विश्व में भारत को नई पहचान मिली है वह सूचना प्रौद्योगिकी में हो रही है प्रगति से ही है इलेक्ट्रॉनिक डाटा के रूप में किए गए संदेशों को अधिक सरल-सहज और रुचिकर बनाना आवश्यक है। यह तभी संभव है जब सूचना प्रौद्योगिकी की डिजिटल भाषाओं को ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं को भाषा के अनुरूप के लोगों तक सूचनाएं पहुंचाई जाए, जिससे देश के सर्वाधिक विकास का लक्ष्य प्राप्त हो सके, सूचना प्रौद्योगिकी का विकास कार्यक्रम जैसे- कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य परिवार कल्याण, जनसंख्या नियंत्रण, साक्षरता अभियान, व्यापार, रोजगार सृजन और गरीबी उन्मूलन। आज क्षेत्र में वर्तमान युग कंप्यूटर एवं सूचना संप्रेषण तकनीकी का युग है जिसे सूचना प्रौद्योगिकी का नाम दिया जाता है दैनिक जीवन में सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग प्रमुख भविष्यवाणी की जा सकती सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी दैनिक जीवन के व्यस्त कार्यक्रम और जिम्मेदारी के बावजूद मानव जीवन को प्रभावित करने में हमेशा विजई रही है ग्रामीण महिलाओं के लिए सूचना प्रौद्योगिकी योजना "साइंस एंड टेक्नोलॉजी फॉर वुमन सीड कार्यक्रम" के तहत यह योजना विशिष्ट लक्ष्य समूह के रूप में महिलाओं पर केंद्रित है इस योजना का उद्देश्य ऐसी परियोजनाओं पर कार्य करना है जो

महिलाओं के लिए 'जीवन की गुणवत्ता' से जुड़ी हो महिलाओं की कामकाजी परिस्थितियों में सुधार के लिए सूचना प्रौद्योगिकी के शोध विकास उन्मूलन को बढ़ावा देना भी इस परियोजना के उद्देश में शामिल है ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के लिए लाभकारी रोजगार के नए अवसरों का सृजन और प्रौद्योगिकी आधारित विकास के लिए ग्रामीण महिला के योगदान को प्रोत्साहित करने के लिए क्या योजना तैयार की गई। लोनली क्राउड के अनुसार, आज के समाज में औद्योगिक नगरीकरण, नवाजचारों और विकसित प्रौद्योगिकी के व्यवहार के नए ढंग विकसित हुए। बदलती हुई सामाजिक-आर्थिक आवश्यकताओं के कारण एक ऐसी प्रौद्योगिकी की आवश्यकता महसूस की जाने लगी है जिससे कम समय में व्यक्ति अपनी अधिक से अधिक आवश्यकताओं को पूरा कर सके। वर्तमान समाज को 'सूचना समाज' के नाम से संबोधित करते हैं सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से दुनिया को छोटा बना दिया है इसी कारण में मैकलुहान ने इसे ग्लोबल विलेज की संज्ञा दी है।

इस प्रकार कंप्यूटर,माइक्रो विद्युत उपकरण और पूर्व रूप टेलीविजन, रेडियो, सिनेमा और लेजर के द्वारा निरंतर विकास हो रहा है इसका प्रभाव संपूर्ण सोसाइटी पर वर्तमान में सूचना क्रांति को गति प्रदान करने एवं प्रतिदिन नया रूप धारण करने सूचना प्रौद्योगिकी कीभूमिका ग्रामीण एवं शहरी निर्विवाद से सर्वोपरि है सूचना प्रौद्योगिकी के वर्तमान समय में मानवीय विचार को एक स्वरूप देने के लिए विभिन्न रूपों में संसाधन संप्रेषण अधिग्रहण एवं पुनरावृति अधिकारियों को त्रुटि रहित एवं कुशलतापूर्वक होता है वर्तमान परिदृश्य में सूचना संचार के जरिए आज हम आधुनिक युग में इंटरनेट, व्हाट्सएप,मैसेंजर और इलेक्ट्रॉनिक मेल, संचार के लिए सूचना प्रौद्योगिकी विकास का अनूठा तोहफा है। मनोरंजन के साधन और घर बैठे खरीदार तथा फिल्म व्यापार जैसे हमारे ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं की तरक्की का रास्ता निकाल सकते हैं शिक्षा के प्रचार-प्रसार में भी कर सकते हैं।

सूचना प्रौद्योगिकी, संचार साधन और समाचार के इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों ने घर के अंदर बैठी महिलाओं को भी प्रोत्साहित किया। देश की आधी आबादी में आए इस बदलाव से विकास की गति तेज हो रही है खेत में हल जोतने से लेकर चांद-सितारों का तिलिस्म तोड़ने तक, सड़क किनारे बैठकर पत्थर तोड़ने से लेकर रोजगार के नए क्षेत्रों की तलाश तक, आंगन में बैठकर चूल्हे-चौके की झंझटो से लेकर वैश्विक की गुत्थियाँ सुलझाने तक महिलाएं आज हर क्षेत्र में हैं। भारतीय समाज में स्त्री एक मौन उपस्थिति थी लेकिन, आज सूचना प्रौद्योगिकी की अहम बदलाव ने भारतीय संस्कृति की दुनिया में स्त्री को बेहद प्रखर उपस्थिति बना दिया है। आज परंपराओं की जकड़न और पश्चिमीकरण की आंधी के बीच संस्कृति के क्षेत्र में कुछ भी मौलिक हो रहा है तो उसका श्रेय महिलाओं को जाता है देशभर में फैली विविध कला

संस्कृति की परंपराओं को गहराई से परखने और उस पर आलोचनात्मक विमर्श करने में कपिला वात्सायन, महाश्वेता देवी, कुर्रतुल ऐन हैदर, अरुंधति राय, कृष्ण सोबती आदि महिलाओं की भूमिका एक समाजशास्त्री की भूमिका है जिन्होंने अनुसूचित जातियों, आदिवासियों, दलित महिलाओं आदि के ज्वलंत प्रश्नों का हल खोजने के लिए साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से आंदोलनों को निष्कर्ष तक पहुंचाया जा सकता है सूचना प्रौद्योगिकी की क्रांति ने सर्वाधिक महिलाओं की जीवन शैली को प्रभावित किया है। परिवारिक संबंधों पारंपरिक मान्यताओं और देश-विदेश में कार्य परिवारिक नातेदारी से संबंध बनाने में इस प्रौद्योगिकी ने महिलाओं को संबल प्रदान किया है। इतना ही नहीं जो महिलाएं पढ़ लिख कर अपना जीवन सँवारना चाहती हैं उन्हें भी सूचना प्रौद्योगिकी के विभिन्न माध्यमों से काफी सहायता प्राप्त हो रही है किसी भी महिला स्तुति अध्ययन का उद्देश्य भारतीय सामाजिक संरचना में स्त्री और पुरुष के सामाजिक प्रतिष्ठा क्रम के मुख्य आधारों की खोज करना ही नहीं अपितु आधुनिक सामाजिक परिप्रेक्ष्य में यह भी है कि सूचना की सामाजिक प्रतिष्ठा पुरुषों की तुलना में किस प्रकार परिवर्तित है और बेहतर हो सकती है तथा विभिन्न समुदायों के पुरुषों और महिलाओं के मध्य पारिवारिक, सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक संबंधों के प्रभाव का परिवर्तित स्वरूप क्या है

- मुख्य शब्द – सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी, महिला सशक्तिकरण, ग्रामीण, इंटरनेट, महिलाएं

- ग्रामीण महिलाओं के विकास में सूचना प्रौद्योगिकी का योगदान-

* टेलीफोन- इंटरएक्टिव वॉइस रिस्पांस

* कंप्यूटर की वेबसाइट - विशेषज्ञता की समझदारी, परामर्श, समुदाय

* उपग्रह- परामर्श, बैंकिंग, नेटवर्किंग

* इंटरनेट ब्रॉडबैंड - जानकारी साझा करना, सोशल मीडिया, ई-समुदाय, बैंकिंग, बाजार, प्लेटफार्म, ट्रेडिंग आदि।

* सेंसर नेटवर्कस - त्वरित (रियल टाइम) जानकारी, बेहतर गुणवत्ता तथा जानकारी एवं बेहतर

* जानकारी भंडारण एवं विश्लेषण- सुषमा कार्रवाई करने की योग्य जानकारी

> सूचना प्रौद्योगिकी के संदर्भ में बात करें तो एक विषय के रूप में दो स्वरूप है-

सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव पडा है-

समाज में यह कहना गलत नहीं होगा कि दूसरी ओर युवा वर्ग जनसंचार के चमक के माया जाल में फंसता जा रहा है। यह युवाओं में तेजी से पनप रहे मनोविकारों,दिशाहीनता और कर्तव्य को संचार माध्यमों के दुष्परिणामों से जोड़कर देखा जा सकता है पश्चिम का अंधा अनुसरण करने की प्रवृत्ति उन्हें आधुनिकता का पर्याय लगने लगी है। इनसे युवाओं की पूरी जीवन शैली, खानपान, वेशभूषा और बोलचाल सभी समग्र रूप से शामिल हैं मद्यपान और धूम्रपान उन्हें एक फैशन का ढंग लगने लगा है। नैतिक मूल्यों के हनन में ये कारण मुख्य रूप से उत्तरदाई है आपसी रिश्ते नातों में बढ़ती दूरियां और परिवारों में बिखराव की स्थिति इसके दुखदाई परिणाम हैं, सूचना प्रौद्योगिकी के अंतर्गत आने वाले माध्यम हैं टीवी, रेडियो, मोबाइल, इंटरनेट, यूट्यूब, व्हाट्सएप ग्रामीण युवा वर्ग पर इन सभी सूचना संचार माध्यमों ने अपना व्यापक प्रभाव छोड़ा है। इनका प्रभाव इतना शक्तिशाली है कि आज के पुरुषों या महिला जनसंचार माध्यमों के बिना अपने दिन की शुरुआत ही नहीं कर सकते हैं। वर्तमान में मोबाइल और इंटरनेट अत्याधुनिक तकनीकों के उदाहरण हैं जिनका निसंकोच उपयोग अधिकांश युवाओं द्वारा किया जा रहा है मोबाइल एक ऐसा माध्यम है जिसे दूर बैठे व्यक्ति के साथ बातें की जा सकती है तथा अपने हसीन पलों को चित्रों के रूप में कैद किया जा सकता है यह तो इसका सदुपयोग है परंतु आज ग्रामीण या शहर के सभी युवा वर्ग चाहे लड़के या लड़कियां हो या महिला हो इस माध्यम का गलत उपयोग एस.एम.एस जैसे दूरव्यसनों में फंस जाती है किसी प्रकार इंटरनेट सूचना प्रौद्योगिकी माध्यमों में सबसे प्रभावशाली है जिसमें दूरियों को कम कर दिया है इसका अधिकतर उपयोग युवा वर्ग द्वारा किया जाता है, यह ज्ञानवर्धक में तो सहायक है परंतु आज वर्तमान समय में युवा द्वारा उसका दुरुपयोग अधिक होता जा रहा है हालांकि सरकारी व्यक्तियों द्वारा सूचना प्रौद्योगिकी का सही उपयोग किया जा रहा है। तमाम अश्लील साइटों पर जाकर अपनी उत्कंठा को शांत करते हैं परंतु यह नहीं जानते हैं कि उनका और समाज का दोनों का पतन होता है साथ ही इंटरनेट के अधिक उपयोग में साइबर क्राइम जैसे अपराध करने की नई विधा उत्पन्न कर दी है जिससे ग्रामीण युवा एवं महिला वर्ग मानसिक, शारीरिक और आर्थिक पतन की ओर अग्रसर हो रहा है जो हमारे समाज के लिए चिंता का विषय है। सूचना प्रौद्योगिकी एवं जनसंचार के माध्यमिक ने शिक्षा, मनोरंजन, व्यापार और जनमत समाज को गतिशील बनाने तथा सूचना का बाजार बनाने, में सहयोग किया,वही अश्लीलता, हिंसा मनोविकार, उपभोक्तावादी प्रवृत्ति तथा समाज को नैतिक और सांस्कृतिक पतन की ओर अग्रसर किया है। अब हमारे युवाओं को इसका ध्यान करना होगा किसकी ओर जाना चाहते हैं।

साहित्यिक पुनरावलोकन-

* पिल्लाई और शांत (2008), " आईसीटी एंड एंपावरमेंट प्रमोशन अमंग पूअर: हाव केन वी मेक इट हैपन? सम रिफ्लेक्शन ऑन केरलाज एक्सपीरियंस " - सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के फलस्वरूप गरीब महिलाओं में रोजगार को कैसे प्रोत्साहन मिला है, इसे 'केरला' के कुछ अनुभवों से प्रेरित किया गया है।

* मिस्तर,एस (2003) " पार्ट-2 - ग्लोबलाइजेशन एंड आईसीटी: एंप्लॉयमेंट अपॉर्चुनिटीज फॉर वूमेन "-वैश्वीकरण, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी महिलाओं के लिए रोजगार के जो अवसर खुलकर सामने आए हैं, उन विभिन्न क्षेत्रों पर प्रकाश डाला है।

* डी.रीसमैन द लोन्ली क्राउड (1950) " आज के समय में औद्योगिकरण एवं नगरीकरण, नवाचारों एवं विचारों में प्रौद्योगिकी के कारण व्यवहार के नए ढंग की विकसित हुए है बदलते हुए सामाजिक, आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा कर सकें। सामाजिक परिवर्तन की इस पद्धति को हम सूचना क्रांति का नाम देते हैं।"

* जिप (1994) – " इनका अध्ययन बताता है कि भविष्य में कृषि तकनीकी, कृषि विकास के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी तथा ज्ञान के प्रबंध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।"

शोध समस्या के उद्देश्य-

1- सूचना प्रौद्योगिकी तक ग्रामीण महिलाओं की पहुंच का अध्ययन करना।
2- सूचना प्रौद्योगिकी का ग्रामीण महिला सशक्तिकरण की भूमिका को ज्ञात करना।
3- सूचना प्रौद्योगिकी के साधनं जैसे- कंप्यूटर, इंटरनेट आदि के संबंध में उत्तरदाता जानते हैं कि नहीं इन साधनों के प्रभाव को ज्ञात करना।
4- सूचना प्रौद्योगिकी के अंतर्गत ग्रामीण महिलाओं के विकास की जागरूकता, आत्मविश्वास, वयक्तिक पक्षों का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएं –

किसी भी प्रकार का शोध कार्य करने से पहले हम कुछ परिकल्पनाएं निश्चित करते हैं ये परिकल्पना सकारात्मक या नकारात्मक हो सकती है प्रस्तावित शोध पत्र में कुछ परिकल्पना एक निश्चित की गई है जो इस प्रकार हैं-

1- नवीन सूचना प्रौद्योगिकी के साधनों की पर्याप्त पूर्ति करके ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक आर्थिक दशाओं को सुधारा जा सकता है।

2- सूचना प्रौद्योगिकी से ग्रामीण महिलाओं में सामाजिक बदलाव तीव्र गति से हो रहा है।

3- क्या ग्रामीण महिलाओं ने सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से देश के विकास की गति देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

4- शिक्षित व कार्यशील महिलाएं, अशिक्षित व घरेलू महिलाओं की तुलना में सूचना प्रौद्योगिकी से अधिक प्रभावित होती हैं।

नोट - उक्त वर्णित उद्देश्य एवं अध्ययनों के आधार पर ही सामाजिक शोध में तीन प्रकार के शोध प्रारूप बनाए जाते हैं जो निम्न प्रकार हैं-

- अन्वेषणात्मक एवं निरूपणत्मक शोध प्रारूप
- वर्णनात्मक एवं रचनात्मक शोधा प्रारूप
- परीक्षणात्मक प्रारूप

शोध का महत्व-

प्रस्तुत शोध सूचना प्रौद्योगिकी का वर्तमान में अपने आप एक नया विषय है अब देश में अनेक क्षेत्रों में विभिन्न प्रांतों पर प्रकाश डाला गया है इसके महत्व को निम्नांकित बिंदुओं से स्पष्ट किया गया है-

- यह सामाजिक व्यवस्था में ग्रामीण महिलाओं को नए रोजगार सृजन करती है।
- सूचना प्रौद्योगिकी प्रशासन और सरकार में पारदर्शिता लाती है इससे भ्रष्टाचार खत्म करने में सहायता मिलती है।
- सूचना प्रौद्योगिकी क्रांति का प्रयोग योजना बनाने, नीति निर्धारण तथा सामाजिक निर्णय लेने में होता है।

परंपरागत भारतीय सामाजिक व्यवस्था सूचना प्रौद्योगिकी से वंचित थी, अलग-अलग रूप से विद्यमान थी लेकिन वर्तमान भारत में आई सूचना प्रौद्योगिकी संपूर्ण समाज के अनेक पक्षों में क्रांतिकारी परिवर्तन किए समाज की दशा और दिशा में प्रगति एवं विकास के नए पंख लगे और भारतीय समाज के संस्कृति में नवाचार देखने को मिला।

ग्रामीण महिलाओं के लिए महत्वपूर्ण कार्यक्रमों के उद्देश्य-

ब्रांडबैंड हाईवेजम, बाइल कनेक्टिविटी, पब्लिक इंटरनेट एक्सेस प्रोग्राम, ई-क्रांति, सबके लिए सूचना, सबके लिए जानकारी, इलेक्ट्रॉनिक्स में आत्मनिर्भरता, रोजगार मूलक सूचना प्रौद्योगिकी, अर्ली हार्वेस्ट प्रोग्राम, सुगम्य भारत ऐप, एग्रीमार्केट एप, लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली, भारत ब्रांड नेटवर्क, ई- बस्ता, उमंग एप, ई-पंचायत, राष्ट्रीय कृषि बाजार।

अब इन कार्यक्रमों को महिलाओं की नजर से देखें कि कैसे उनके लिए उम्मीद की किरण जगाता है पहली बात तो हर क्षेत्र में इसकी अनिवार्यता में ही महिलाओं की स्थिति में सुधार देखा जा सकता है यानी जैसे-जैसे यह क्रांति बढ़ेगी, देश के हर हिस्से में पहुंचेगी, आज शहरी महिलाएं डिजिटल बदलाव को लेकर अनभिज्ञ नहीं है छोटे-बड़े शहर की हर लड़की और महिला किसी न किसी रूप में तकनीक से जुड़ी हैं देशभर में हो रही घटनाओं से वह किसी न किसी माध्यम से अवगत हो रही है लेकिन ग्रामीण क्षेत्र में स्थिति अभी उतनी तेज से नहीं बदली है यही वजह है कि सरकार ने यह सुनिश्चित किया है कि सूचना प्रौद्योगिकी कार्यक्रम का चेहरा खासतौर पर ग्रामीण और आदिवासी इलाकों में तकनीक का इस्तेमाल करने वाली महिलाएं बनेगी गांव के स्तर पर सरकारी योजनाओं के तहत विभिन्न प्रकार की सेवाएं देने वाली महिलाओं को सरकार अपने इस महत्वाकांक्षी की पहचान बनाना और सूचना प्रौद्योगिकी का ग्रामीण महिलाओं को डिजिटल इंडिया कार्यक्रम से उनके उड़ान में ताकत आएगी सबसे अच्छी बात तो यह दिखाई दे रही है वह है ग्रामीण महिलाओं का कौतूहल से भरा मासूम चेहरा... रोशनी से चमकती आंखें.. जो इसी बहाने मुख्यधारा से जुड़ने का शुभ स्वप्न देख सकेंगीं..... वह सब इस तरह से कर सकेंगीं जो शहर की महिलाएं कर रही हैं... उनका अधिकार भी है.... सूचना प्रौद्योगिकी के नाम पर ही सही... सार्थकता कि कहीं कोई एक बूंद तो झोली में आए.... समंदर इसी से बनेगा।

अध्ययन प्रविधि : (अध्ययन क्षेत्र व विषय वस्तु) –

प्रस्तुत शोध में उत्तर प्रदेश के बाराबंकी जनपद के अनुसार विकासखंड के पांच गांव का चयन कर वहां के रहने वाली ग्रामीण महिलाओं का पर अध्ययन किया गया है पाँच गांवो का चयन दैव निदर्शन पद्धति के द्वारा किया गया है। मसौली विकास खंड से जिन पाँच गाँवों का चयन किया गया है वे है-

1- देवीदीन पुरवा
2- ठाकुर बक्स पुरवा
3- तुलसीपुर
4- अंबौर

5- गनेशपुर

उन पाँच गांवों उद्देश्य पूर्ण निदर्शन पद्धति की सहायता से 300 महिलाओं का चयन कर उनसे तथ्य संकलित किए गए हैं।

- प्रकृति- प्रस्तुत शोध की प्रकृति अन्वेषणात्मक/सर्वेक्षण विधि है।

तथ्य संकलन के स्रोत-

तथ्य संकलन की प्रविधियों को दो भागों में बांटा गया है-

प्राथमिक स्रोत –

प्रस्तुत शोध में संकलन की अनेक विधियों में से अनुभवात्मक अध्ययन में साक्षात्कार, अनुसूची व अवलोकन के द्वारा सूचनाएं एकत्रित की गई है। वांछित तथ्यों को प्रदान करने वाले प्रश्नों की एक अनुसूची तैयार की गई है। इस अनुसूची को एक मार्ग निर्देशिका के रूप में अधिक प्रयोग किया गया है व्यवस्थित अनुसूची को लेकर उत्तरदाताओं से समय सुनिश्चित किया गया है प्रदत समय पर उपस्थित होकर एक-एक प्रश्न को पूछकर उत्तर को समय लिखा है सही तथ्यों को प्राप्त करने के लिए अवलोकन और साक्षात्कार का सहारा लिया गया है प्रश्नों का उत्तर लिखने में अनेक हाव-भाव को भी ध्यान में रखा है।

द्वितीयक स्रोत-

इसके अंतर्गत पूर्व अध्ययन, लेख, समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ, सरकारी प्रतिवेदन, इंटरनेट आदि रही है, जिनसे उपलब्ध समुचित उपयोग किया गया है।

तथ्यों का संकलन एवं विश्लेषण-

सूचना प्रौद्योगिकी का ग्रामीण महिलाओं पर उल्लेखनीय प्रभाव पड़ा सूचना प्रौद्योगिकी के साधनों में रेडियो, टेलीविजन, पत्र-पत्रिकाएं, समाचार पत्र आदि सम्मिलित हैं और रेडियो, इंटरनेट, यूट्यूब समाज में परिवर्तन करने में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है ग्रामीण महिलाओं ने कृषि क्षेत्र में आर्थिक अर्थव्यवस्था की सेहत और विकास के लिए महत्वपूर्ण है आत्मनिर्भर प्रणाली वाला कृषि क्षेत्र देशवासियों के लिए खाद्य पोषण सुनिश्चित करता है इंटरनेट पैठ का संभवत सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव ग्रामीण उद्यमिता को प्रदान किए जाने वाले प्रोत्साहन है नई तकनीके ग्रामीण क्षेत्र में अवसर पैदा करें

जो पहले कभी नहीं थे। आज एक ग्रामीण महिला उद्यमी ऑनलाइन स्टोर बनाकर उत्पाद को सकती है ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक चुनौतियों को जोड़ने तथा वित्त, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा जैसे जीवन स्तर को बेहतर बनाने वाले महत्वपूर्ण स्तंभों के पहुंच में भी सुधार किया है जो लंबी अवधि में महत्वपूर्ण ग्रामीण आर्थिक उत्पादकता पर प्रभाव। महिला सशक्तिकरण के लिए विशेष कार्यक्रम चलाए जाते हैं जिसका प्रभाव महिलाओं पर पड़ा है और रेडियो टेलीविजन, यूट्यूब, इंटरनेट ने महिलाओं की मनोवृत्ति, विचार, आदर्श सोच दृष्टिकोण आदि को परिवर्तित करने में विशेष योगदान दिया है। अखबार एवं पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से ग्रामीण महिलाएं न केवल विश्व के समाचारों से अवगत होती हैं बल्कि कृषि जगत के बारे में भी जानकारी प्राप्त करती है इस प्रकार कहा जा सकता है कि सूचना प्रौद्योगिकी के साधनों से नवीन ज्ञान एवं तथ्यात्मक सूचनाएं प्रदान कर गांव के उत्थान के साथ-साथ महिलाओं के विकास के क्षेत्र में प्रभावशाली योगदान अदा करने के लिए मार्ग प्रशस्त किया है।

तालिका-1

ग्रामीण महिलाओं के विकास में सूचना प्रौद्योगिकी के बारे में उत्तरदाताओं के विचार-

महिलाओं की भूमिका	**संख्या**	**प्रतिशत**
*महिलाओ का सशक्तिकरण एवं आत्मनिर्भरता	93	31.00
*महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार	69	23.00
*महिलाओं के आर्थिक निर्भरता में सहायक	60	20.00
*ग्रामीण कृषि उत्पादन के स्तर में वृद्धि	36	12.00
*कृषि कार्य में इंटरनेट के माध्यम से जागरूकता	24	08.00
*अन्य	18	06.00
योग	300	100.00

सारणी के आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि 31% उत्तरदाताओं ने स्पष्ट किया कि सूचना प्रौद्योगिकी के कारण महिलाओं का सशक्तिकरण एवं आत्म निर्भरता 23% महिलाओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ। 20% उत्तरदाताओं की राय में सूचना प्रौद्योगिकी के महिलाओं के आर्थिक निर्भरता में सहायक हुई है। 12% ग्रामीण कृषि उत्पादन के स्तर में वृद्धि हुई है। 8% कृषि कार्य में इंटरनेट के माध्यम से जागरूकता और 6% उत्तरदाताओं के अनुसार सूचना प्रौद्योगिकी ने ग्रामीण महिलाओं पर अन्य प्रभाव उत्पन्न किए हैं।

तालिका-2

महिला सशक्तिकरण पर सूचना प्रौद्योगिकी के प्रभाव के बारे में उत्तर दाताओं के विचार-

भूमिका	संख्या	प्रतिशत
1- नई कृषि तकनीकि का डिजिटलीकरण	84	28.00
2- ग्रामीण महिलाओं की वैचारिकी में शैक्षिक परिवर्तन	42	14.00
3- कृषि उत्पादन में निरंतर वृद्धि	36	12.00
4- ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए योजनाओं का ज्ञान	33	11.00
5- ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक सुदृढ़ता में वृद्धि	33	11.00
6- महिलाओं में कृषि प्रौद्योगिकी के प्रति सकारात्मक सोच का विकास	33	11.00
7- अन्य।	09	03.00
योग	300	100.00

सारणी के आंकड़ों से स्पष्ट होता है 28% उत्तरदाताओं का कहना था कि ग्रामीण समाज में नई कृषि तकनीक के इंटरनेट के माध्यम से डिजिटलीकरण हुआ है। 14% उतरदाता के अनुसार ग्रामीण महिलाओं की वैचारिकी में शैक्षिक बदलाव हुए। 12% उत्तरदाताओं के अनुसार कृषि उत्पादन में सकारात्मक एवं निरंतर वृद्धि हुई। 11% उत्तरदाताओं की राय के

अनुसार महिलाओं में कृषि प्रणाली की व्यवस्था के प्रति सकारात्मक सोच का विकास हुआ। 11% उत्तरदाताओं का कहना है कि ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए व्यवस्थित कार्यक्रम एवं योजना का ज्ञान हुआ। 11% उत्तरदाताओं के अनुसार महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सूचना की वृद्धि हुई। 3% उत्तरदाताओं के अनुसार सूचना प्रौद्योगिकी के साधनों का ग्रामीण महिलाओं एवं समाज पर अन्य प्रभाव भी पड़ा है।

➢ सारांश एवं निष्कर्ष-

भारत जैसे विशाल देश में सूचना प्रौद्योगिकी की क्रांति आज देश की शहरी और ग्रामीण हिस्सों के बीच सेतु बनाने के साथ-साथ ग्रामीण विकास के लिए उत्प्रेरक बन गया है। "भारत विचार शिखर सम्मेलन" में अपने मुख्य भाषण में 'प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी' ने भारत को अवसरों की भूमि की उपमा देते हुए उल्लेख किया कि शहरी लोगों की तुलना में ग्रामीण इंटरनेट उपयोगकर्ता अधिक हैं इस अभियान ने इंटरनेट की पैठ बढ़ई जो अपेक्षाकृत हाल ही में हुआ है जिसके चलते घरों में महिलाओं के लिए अपार लाभ की संभावनाएं पैदा हुई है डिजिटल प्रौद्योगिकी ने ग्रामीण क्षेत्रों में 'जीवन की गुणवत्ता' में सुधार की क्षमता प्रदान की है उदाहरण के तौर पर ऑनलाइन बाजारों, भोजन के घर पहुंचने की सुविधा और निरंतर मनोरंजन तक पहुंच ने शहरी और ग्रामीण आबादी के अनुभव के अंतर को कम कर दिया है। फरवरी 2020 को अपने बजट भाषण में वित्तमंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण ने कहा कि सरकार की योजना पंचायत स्तर पर 'कनेक्टिविटी' प्रदान करना है। सरकार ने 2020-21 में भारत ने कार्यक्रम के लिए 6000 करोड रुपए आवंटित करने का प्रस्ताव किया था ताकि एक लाख ग्राम पंचायतों को हाइपरलिंक किया जा सके। और यह महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम भी है 'प्रधानमंत्री घर तक फाइबर' स्कीम 2020 में शुरू की गई। सूचना प्रौद्योगिकी के तहत कॉमन सर्विस सेंटर ने भारत के लिए ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क बिछाने का काम किया। महिलाएं अब निश्चित रूप से मोबाइल रखना चाहती हैं फिलहाल गांव में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी सुविधाओं के आने के बाद कई तरह की सुविधाओं को चार चांद लग गए हैं अब गांव में हर जगह जन सूचना-केंद्र एवं 'साइबर कैफे' खुल रहे हैं जहां से गांव के लोग आसानी से अपनी जरूरत के बारे में जान सकते हैं ग्रामीण महिलाएं भी कंप्यूटर एवं इंटरनेट का उचित प्रयोग कर जानकारी प्राप्त कर रही है इससे एक तरफ उनके ज्ञान में वृद्धि हो रही है दूसरी तरफ रोजगार के अवसर मिल रहे हैं साथ ही उनका शैक्षणिक और आर्थिक उन्नति भी हो रही है।

संदर्भ-

1- कुरुक्षेत्र, फरवरी 2021 पृष्ठ संख्या (16- 25 48)

2- डॉ.मनोहर के सनप "सूचना और संचार की भूमिका" महिला सशक्तिकरण में प्रायोगिक का क्रॉनिकल नोबेल वाडिया इंस्टीट्यूट आफ मैनेजमेंट स्टडीज एंड रिसर्च आईएसएसएन: 2230-966 खंड- 24-25 फरवरी 2015

3- एम.मुखर्जी मोनादीप 'कुरुक्षेत्र', "सूचना एवं संचार मंत्रालय प्रसारण भारत सरकार" सी.जी.ओ नई दिल्ली, फरवरी 2021 पृष्ठ सं.(36- 44,46)

4- पी.बी. काणे- हिस्ट्री ऑफ धर्मशास्त्र

5- के.स्वाति: 2016 " महिला सशक्तिकरण में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका" पृष्ठ संख्या (9,146,151)

6- डॉ निर्मला सिंह व ऋषि गौतम: "ग्रामीण समाज और संचार": बदलते आयाम (kukufm.com)

7- पी.वी.श्रीनिवास,:(अगस्त 2017), 'कुरुक्षेत्र', सूचना एवं संचार मंत्रालय भारत सरकार, पृष्ठ संख्या (40,41,42)

8- बालेंदु शर्मा दधीच: (मई 2018), कुरुक्षेत्र "ग्रामीण विकास सूचना एवं संचार तकनीकी का योगदान",पृष्ठ संख्या (21,22,23)

Website **–**

http://ignited.in/I/a/232179

https://m-hindi.webdunia.com/current-affairs/digital-india-and-women-115070100055_1.html?amp=1

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-1, Issue-4, January 2023
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number-January-2023/30

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

अरविन्द कुमार एवं डॉ० सीताराम सिंह

For publication of research paper title

ग्रामीण महिलाओं के विकास में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-01, Issue-04, Month January, Year-2023.

Dr.Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr.Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com